8/02/19
16

## ग्रामीण एवं नगरीय अनुबंध

नगरों को किसी विशेष ऐतिहासिक युग का देन नहीं माना जाता है। वास्तव में इनका इतिहास मानवीय साधनों के विकास युग के विकासक्रम के साथ जुड़ा हुआ है। मानव उद्विकास के क्रम में मनुष्य को आखेट अवस्था से पशु अवस्था में पहुँचा दिया जहाँ वह यद्यपि स्थायी रूप से निवास तो नहीं करने लगा परंतु तुलनात्मक दृष्टि से उसके जीवन में स्थायित्व आया। मानव उद्विकास की अन्य अवस्था जिसे कृषि के नाम से जाना जाता है। जिसने मानव को इस बात के लिए बाध्य कर दिया है कि वह निश्चित समय तक निश्चित स्थान पर रहे। इसके परिणामस्वरूप गाँवों का जन्म हुआ। नगर की उत्पत्ति के संबंध में अनेक विद्वानों ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं।

(1) **मार्ग्रेट मूरे** :- "नगर की उत्पत्ति धातु युग में हुई है। जिन व्यक्तियों के पास धातु के अस्त्र-शस्त्र थे, वे अन्य व्यक्तियों पर जिनके पास पत्थर के अस्त्र थे शासन करते थे। ये व्यक्ति सैनिकों को भी सुरक्षा की दृष्टि से अपने साथ रखते थे। ये ऐसे स्थानों पर बस गए जहाँ वे आक्रमण कार्यों से ठीक से अपनी सुरक्षा कर सकें। इस प्रकार नगर स्थायी सैनिक शिविरों के रूप में विकसित हुए।"

Scanned with CamScan

② क्वीन थॉमस :- "पहले गाँव विकसित में कालांतर में यही गाँव नगरों के रूप में परिवर्तित हो गए। ये नगर धीरे-धीरे सम्राजों की राजधानी बन गई। अपने विकास के प्रारंभिक अवस्था में ये नगर विशाल नहीं होकर बहुत छोटे होते थे।"

③ ममफोर्ड :- "नगरों का विकास गाँवों से हुआ है। आजकल जो नगर दिखाई पड़ रहे हैं उनमें से अधिकतर गाँवों में ही मौजूद थे।"

④ चार्ल्स कूले :- "नगरों की उत्पत्ति के संबंध में लिखा है कि नगरों का जन्म यातायात तथा संदेशवाहन के साधनों के विकास की स्थिति अनुकूल थी वहीं पर बड़े नगरों का जन्म हुआ। यही कारण है कि समुद्र के किनारे सबसे बड़े नगर विकसित हुए हैं।"

एम॰ एन॰ श्रीनिवास ने आधुनिक भारत के गाँवों के संदर्भ में यह कहा है कि पूर्णरूप से ~~स्वावलंबी~~ स्वावलंबी गाँव गणतंत्र एक कल्पना मात्र है। यह सदैव एक वृहद सत्ता का हिस्सा रहा। केवल अंग्रेजी शासनकाल से पहले भारतीय गाँव आज की गाँव की अपेक्षा कस्बों पर आर्थिक दृष्टि से कम निर्भर थे। यदि हम समकालीन भारतीय समाज में (ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र) अथवा संपर्क सूत्रों को देखे तो यह निश्चित रूप से कह सकते

Scanned with CamScanner

है कि गाँव अपने में पूर्ण इकाई नहीं है। तथा यह विभिन्न प्रकार से बाहरी जगत से जुड़ा हुआ है। गाँव बाहरी अथवा विस्तृत जगत से पृथक नहीं है। इसे हम निम्नलिखित तथ्यों द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं —

① ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र के सामाजिक आधार —

भारतीय ग्रामीण समुदायों में प्रायः ग्राम बर्हिविवाह का नियम रहा है। गाँव के लड़के-लड़कियों की शादी गाँव से बाहर होती थी। अतः गाँव परस्पर नातेदारियों से बंध जाते थे। इतना ही नहीं कभी-कभी बाहर के लड़के घर-जमाई के रूप में गाँव में आकर बसे रहते हैं। इसके अतिरिक्त जाति के आधार पर भी बाह्य ग्रामों के साथ परस्पर घनिष्ठ संबंध रहे हैं। अनेक जातियाँ ऐसी हैं जो कुछ निश्चित गाँव में अपनी बिरादरी पंचायत, जैसे संगठन बना लेती हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाटों में वंश के आधार पर अनेक गाँवों की एक 'देशखाप' बनायी जाती है जो बड़ी शक्तिशाली संरचना है।

② ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र के आर्थिक आधार पर —

ग्रामीण सूत्रों के परंपरागत हाट या बाजार कई ग्रामों के लोगों के मिलने के स्थल थे। इसी भाँति पशु

Scanned with CamScanner

मेले जैसे विशिष्ट प्रकार के बाजार पूरे क्षेत्र के लोगों के आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। घूमने वाले दुकानें नई वस्तुएँ के बारे में ग्रामीणों के लिए जानकारीं स्रोत थी। इसके अतिरिक्त जब कोई नया गाँव बसता था तो वहा सेवक जातियों अथवा कामगारों को बाहर से लाया जाता था। धीरे-धीरे ऐसे बाहरी लोग गाँव के सदस्य के रूप में वहाँ के स्थायी निवासी बन जाते थे। इस प्रकार सोनार, लोहार जैसी अनेक जातियाँ गाँव में ही नहीं बल्कि एक से अधिक गाँवों को अपनी सेवाएँ प्रदान करती थी।

(3) ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र के धार्मिक आधार :-

किसी गाँव का महात्मा अथवा पूजा स्थल प्रसिद्ध हो जाता था और पड़ोस के अनेक गाँव के लोग उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने या रोग से मुक्ती प्राप्त करने, भूत-प्रेत जैसी बाधा से छुटकारा पाने या अन्य किसी आपदा से बचने हेतु या ज्ञान अथवा शांति की खोज में उनके पास आते जाते रहते थे। प्रायः पुरोहितों के जजमान भी एक से अधिक गाँवों में फैले होते थे। धार्मिक मेले और तीर्थ प्रथा जैसे की पास की नदी पर स्नान, मेला आदि भी ग्रामीण नगरीय अंतः क्रिया के आधार थे। सन्यासियों की प्रथा की परंपरागत जन्म संचार के

Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में क्रियाशील रही है।

9/2/19 ~~④ राज्य का संपर्क →~~

④ ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र के राजनीतिक आधार —

राज्य का संपर्क सदा ही ग्राम या राज्य से रहा है। लगान लगाने की दृष्टि से कोई व्यवस्था गाँव और राज्य को परस्पर जोड़ती रही है ऐसी व्यवस्था के रूप में नवाबों, जागीरदारों, जमींदारों को गिनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक जाति बहुलक्षेत्रों में जाति का पंचायतों का भी पता चलता है। सिंचाई के साधनों पर भी राज्य का नियंत्रण रहा है। सेना के लिए भी भर्ती प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों से होती है। प्रशासन और सेना के केन्द्र नगरों में थे गाँव उनके नियंत्रण क्षेत्र की इकाईयाँ थीं।

⑤ ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र के सांस्कृतिक क्षेत्र के आधार —

ब्रजराज चौहान के शब्दों में "सांस्कृतिक जीवन ही प्रदेशिक परंपराओं को आगे बढ़ाता है। किसी नगर की रासलीला प्रसिद्ध है तो कहीं की रामलीला या कहीं की झाँकियाँ। इन्हीं नगरों में पूजा की सामग्री, शंख, माला घंटियाँ मिलती है और भजन या धार्मिक कथाओं की पुस्तकें।"

Scanned with CamScanner

आस-पड़ोस के ग्रामीण इन सभी सांस्कृतिक कारकों के कारण भी नगरों में आते हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय गाँव एवं नगर पूर्णतः आत्मनिर्भर पृथक और एकाकी नहीं रहे हैं। उनके बीच संपर्क सूत्र अथवा अंतः क्रियाओं का संबंध रहा है। आधुनिक युग में ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र का व्यापक गहनीकरण हुआ है। इन संरचना और विकास कार्यक्रमों में उनके बीच तीव्रता से अंतः क्रियाओं को बढ़ाया है। पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत सामुदायिक विकास का चलन, परिवार नियोजन, सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार पर आधारित नियमित चुनाव, सत्ता का विकेन्द्रिकरण, दलगत राजनीति सरकार की अनसूचित जातियों एवं जनजातियों के उत्थान के लिए अपनायी गई सुरक्षात्मक भेदभाव की नीति तथा समाज कुल्याण संबंधि अनेक योजनाओं आदि ने ग्रामीण नगरीय संपर्क सूत्र को तीव्र कर दिया है। आधुनिक युग ने इस संपर्क सूत्र के आधार को मजबूत बना दिया है।

Scanned with CamScanner